भगवत् कृपा

THE DIVINE GRACE

महाप्रभु स्वामिनारायण प्रणीत सनातन, सचेतन और सक्रिय गुणातीतज्ञान का अनुशीलन करने वाली द्विमासिक सत्संग पत्रिका

वर्ष 25 अंक : 1 | मंगलवार , 15.1. 2002 | वार्षिक चंदा : 50.00

साक्षात्कार दिन स्वर्णजयंती का महामंगलकारी दिन...

''मेरा साक्षात्कार–वह मन, बुद्धि, चित्त, अहम् और प्राण का दिव्यता में टोटल रुपांतर का साक्षात्कार है, ज्ञानसमाधि का साक्षात्कार है। और इसीलिए यह जंग खेली और उसमें विजयी हुए। आप सब ने हमारी खूब शोभा बढ़ाई। धन्य हो बापा को कि हमें मुफ्त में वारसा दे दिया ! अब कुरेद कर दुःख खड़े नहीं करना। सह लेने की भावना (रखना)। कुसंगी का भी सहन करना है।

बा का प्रेम, पप्पा की प्रमाणिकता और मेरी निर्दोषबुद्धि से एक समाज का सर्जन हुआ–हकीकत है। केवल कृपा करके इस जोग में रखा है। यहां जगत है नहीं। लेकिन पप्पा ने कहा यूं तुम जहां हो, तुम्हारा मन वहां है। और... मन यानि–जगत ! उसका मुकाबला करना। डरने की जरुरत नहीं। कोई निंदा करे, तो भी जयकार हमारा है। अक्षरपुरुषोत्तम के सनातन तत्त्व–शास्त्रीजी महाराज, योगीजी महाराज और काका, पप्पा, बा को याद करके काम करना। 'पप्पा ! अखंड हमारे साथ रहना'–यूं उठते ही प्रार्थना करना। परेशानी आए तो हम - पप्पा तुम्हारे साथ ही हैं। तुमने हमारी खूब शोभा बढ़ाई। आज तुम्हें देख कर मुझे खूब आनंद और उमंग होती है। धन्य हो मेरे प्यारे प्रभु को ! करोड़ों वंदन हो ! संप, सुहृद्भाव और एकता से जी रहे हो। गुणातीतज्ञान का नवनीत और निर्दोषबुद्धि सभी को सुलभ हो यही गुरुचरणों में प्रार्थना।''

– प.पू. काकाजी महाराज

वर्षों पहले स्वयं कृपा करके परभाव की भूमिका में प.पू. काकाजी द्वारा कही गई यह परावाणी 3 फरवरी 1952 के गुरुहरि योगीजी महाराज द्वारा कराए भगवान के साक्षात्कार का सम्यक् दर्शन कराती हैं। ये बात या तो कोई पागल कह सकता है या सच में परब्रह्म का साक्षात्कार करी हुई अखंड प्रभुधारक विभूति ही इतनी ऑथेन्टिसीटी से कह सकती है। यह कोई काल्पनिक कथा नहीं, क्योंकि गोंडल में आज भी वह अक्षर मंदिर का अत्यंत पावन साक्षात् स्थान, श्रीजी महाराज की वह मूर्ति जहां यह विरल घटना घटी, उस का हम दर्शन कर सकते हैं। इतना ही नहीं–

बोचासणवासी श्री अक्षरपुरुषोत्तम संस्था द्वारा प्रकाशित 'अक्षरतीर्थ'–प्रथम आवृत्ति की पुस्तक में **गुरुहरि योगीजी महाराज ने स्वयं इस हकीकत पर अपनी मुहर जो लगा दी है** उसका निम्न रुप से जिक्र भी है।

'... प.भ. छगनभाई, दादुभाई, राजकोट मंडल–सभी अक्षरदेरी में भजन कर रहे थे। दादुभाई को घनश्याम महाराज की मूर्ति का लक्ष्य हुआ और बढ़िया आशीर्वाद दिए। शास्त्री महाराज की कृपा से अक्षरदेरी में तीन दिन साक्षात् महाराज के दर्शन हुए।

रात को आरती हो रही थी और दादुभाई घनश्याम महाराज की मूर्ति को एकचित्त से लगातार देखते रहे थे। आधा घंटा एकटक दृष्टि से दर्शन किए और एकदम लक्ष्य हो गया ! आँख की वृत्ति मूर्ति में जुड़ गई, वे स्थिर हो गए। हम सभी पास ही थे। काष्ठवत् देह हो गया... (अक्षरतीर्थ, पृष्ठ-122)

...इस प्रकार घनश्याम महाराज अक्षरधाम में ले गए। दो दिन तक अपने पास रख कर सुख दिया। उस प्रताप से दादुभाई के जीवन में परम शांति हो गई ! व्यवहार के मनसूबे बंद हो गए और व्यवहार में वृत्ति गौण हो गई। ज्ञान में भरपूर हो गए। वे बातें करते तो लगातार तीन घंटे बातें करते। अंग्रेजी में भी बातें करते और हिन्दी में बातें करते। इस प्रकार परम पूज्य शास्त्रीजी महाराज के प्रताप से समाधि हो गई ! (अक्षरतीर्थ, पृष्ठ-123)'

– प.पू. योगीजी महाराज

3 फरवरी 1952 के दिन बनी यह घटना समग्र गुणातीत समाज के लिए आशीर्वादरुप बन गई ! जैसे सिंहनी का दूध स्वर्णपात्र में ही टिक सकता है, ठीक उसी प्रकार बापा ने प.पू. काकाजी जैसे स्वर्णपात्र को ही 'प्रभु के साक्षात्कार' के लिए चुना और हम सभी को धन्य कर दिया ! साक्षात्कार की उसी पल से समग्र गुणातीत समाज के श्रेय के लिए पनपी प.पू. काकाजी की मंगलकारी एवं उच्च भावना आज भी ऐसी ही सक्रिय है-जीवंत है और उनकी यह भावना एवं अथाह परिश्रम के फलस्वरुप ही समग्र गुणातीत समाज आज ब्रह्मकिल्लोल कर रहा है। इस मंगलकारी घटना को पूरे पचास वर्ष होने जा रहे हैं। कितनी सांकेतिक व मार्मिक बात कही जाए कि श्री स्वामिनारायण महामंत्र द्विशताब्दी और श्री स्वामिनारायण महामंत्र की रट लगाने वाले गुरुहरि प.पू. काकाजी का साक्षात्कार दिन स्वर्णजयंती महोत्सव एक वर्ष में ही-मानो साथ-साथ आया। परम धन्यता को पाने, गुरुभक्ति का यत्किंचित ऋण अदा करने के, आशीर्वाद लूटने के ऐसे अनमोल मौके भगवान स्वामिनारायण व गुणातीत स्वरूप कृपा करके हमें देते रहे हैं... यह हमारे प्रति उनकी कैसी अपरिमित करुणा, निःस्वार्थ प्रीति और हमारा खूब परम सौभाग्य ही कहा जाए ना ? जीवदशा में फंसे स्वभावबद्ध हम शायद ही अपने मायिक चक्षुओं व शापित बुद्धि के दायरों के कारण इस अनहद् कृपा को पहचान पाएं। पर एक बात भी निश्चित है कि इस कृपा को जो पहचान लेंगे, उसकी जीतेजी 'अक्षरधाम' में लॉटरी जरुर ही लग जाएगी-इसमें तनिक भी संदेह नहीं।

आध्यात्मिक इतिहास के इस क्रांतिकारी आयोजन में प.पू. काकाजी के सहयोगी रहे गुणातीत समाज के भीष्म पितामह रुप गुरुहरि प.पू. पप्पाजी ने 3 फरवरी 1952 के इस दिन को 'गुणातीत समाज का स्थापना दिन' कहा है। 1991 में प.पू. काकाजी के बारे प.पू. पप्पाजी द्वारा करी निम्न कथावार्ता का एक-एक शब्द हमें प.पू. काकाजी के स्वरुप का दर्शन करा रहा है। आइए, सर्वप्रथम तो हम सब प.पू. पप्पाजी की इस कथावार्ता को निहारें–

''मैत्रीभाव, सुहृदभाव, निर्दोषभाव यानि– काकाजी। काकाजी यानि– सहज आनंद स्वरुप। 24 घंटे उनकी उमंग-जोश, खुमारी, अलमस्ती जाता नहीं था। अच्छे व बुरे प्रसंगों में, भयंकर-कठिन हालात में भी उनका जो स्मित... उनकी अलमस्ताई... वो वैसी की वैसी ही रही और अखंडवृत्ति स्वामी की ओर रखी। 24 घंटे वे मस्ती से घूमते ही रहे। **स्वामिनारायण के अल्प संबंध वाले में भी शास्त्रीजी महाराज को ही देखा और उनके साथ आत्मीयता रख कर अपेक्षारहित सेवा करते ही रहे। काकाजी के सारे जीवन का सार इतने में है।**

काकाजी किसी के सखा के रुप में, किसी के प्रभु के रुप में, किसी के गुरु के रुप में सचमुच जीए। लेकिन, सच में तो काकाजी स्वामिनारायण का ही स्वरुप थे। भावात्मक एकता के स्वरुप और प्रर्वतक थे। संप, सुहृदभाव, एकता–वह काकाजी के जीव का जीवन था। **यह ही करवाने का उनका संकल्प था ध्येय था और वह कराए बिना रहेंगे भी नहीं।**

तो, अखंड काकाजी का सान्निध्य भोगते हो जाएं। 24 घंटे उनके जैसा जोश, खुमारी, मस्ती और आनंद कि– 'मैं काकाजी का हूँ' ऐसे सुख की अंतर में छलक उमटे।

हमारी मूलवृत्ति हो, 'स्व' का कोई भाव हो-वह उड़ाने ऐसे सत्पुरुष कुछ ना कुछ प्रयोग करते रहते हैं। काकाजी ने हमारे लिए बलिदान दिया। देखो ! जोगी महाराज ने काकाजी को साक्षात्कार कराया। फिर जोगी महाराज ने पहले ही प्रवचन में कहा कि शास्त्रीजी महाराज काका को अखंड वश हो गए। काका में शास्त्रीजी महाराज बैठ गए। काका शास्त्रीजी महाराजमय हो गए। और उस समय से लेकर अब तक-इस घड़ी तक वे अखंड ऐसे ही वर्ते हैं। यूं उन्होंने अपने जैसा बनाया और अपने जैसे ही तैयार होने का अब विश्वास आया तभी स्वतंत्र रुप से वे गए।

सूक्ष्म रुप से अंतर में काकाजी बैठे ही हैं। आज काकाजी को प्रार्थना करें। वे तत्त्व तो जाते ही नहीं। एक बार प्रगट होने के बाद वे जाते नहीं। रहते हैं, रहते हैं और रहते ही हैं। तो वचनामृत गढडा अंत्य. 26 जैसी स्थिति जो भी करना चाहे उसमें सुख, शांति, आनंद से वर्तने का भाव प्रगटे ऐसा संकल्प करके धून करें और महाराज, स्वामी, काकाश्री यह संकल्प पूरा करें ऐसी प्रार्थना और आशीर्वाद।''

गुरुवर्य योगीजी महाराज ने प.पू. काकाजी को साक्षात्कार कराया, अपने स्वरुप का दर्शन कराया... तो क्यों ना उन्हीं के साक्षात्कार स्वर्णजयंती के अवसर पर इनके निम्न दो-तीन प्रसंगों का मनन-चिंतन करें जो कि युगों-युगों तक संतों, युवकों, बहनों, गृहस्थों सभी के लिए आदर्श मार्गदर्शन के रुप में एक मिसाल कायम करते हैं–

बापा की कल्याण योजना के मुख्य सूत्रधार के रुप में बापा के साथ ही प.पू. काकाजी गाँव-गाँव विचरण करते थे। तेजस्वी प्रतिभा, वेधक वाणी और भक्तों के प्रति की आत्मीयता से समग्र सत्संग समाज में वे सभी के लाडले व चहेते हो गए थे। योगीबापा की ऐसी जबरदस्त महिमा उन्होंने फैलाई थी कि जहां-जहां बापा पधारे वहां उनका उमंगभरा स्वागत होता। ब्र. स्व. शास्त्रीजी महाराज के बाद सत्संग के एवं अनेक चैतन्यों के तारणहार के रुप में उन्होंने सभी की नज़र यूं योगीबापा की ओर कर दी। सत्संग की इस शुरुआत में काकाजी का खूब बड़ा योगदान था।

आज विश्वभर में योगी बापा द्वारा दीक्षित संत भगवान

स्वामिनारायण के नाम का डंका बजा रहे हैं। सनातन हिन्दु धर्म की विजय पताकाएँ लहरा रहे हैं। परंतु वे ही संत आज से 40 वर्ष पहले जब नवयुवक थे, तब बापा के संकल्प में जोड़ने के लिए प.पू. काकाजी ने उनके पीछे जो परिश्रम किया, जो अपमान सहन किए, खुद बुरे दिखाई दिए उसे यदि नोट करने लगें तो एक ग्रंथ तैयार हो जाए और फिर भी कई - कितनी हकीकत तो अप्रगट ही रहे।

योगीबापा द्वारा 51 शिक्षित युवकों को भागवती दीक्षा देने के इस धन्य अवसर के थोड़े ही समय के बाद बापा सौराष्ट्र के जसदण गाँव के पास से गुज़रने वाले थे। काकाजी भी पीछे की गाड़ी में थे। गाँव-गाँव में बापा का जो भव्य स्वागत होता था, उससे कुछ अलग ही 'उत्सव' करने जसदण के कुछ अग्रणी तत्पर थे। मूल जसदण के वतनी और मुंबई स्थित एक युवक को योगीबापा ने दीक्षा दी है यह खबर मिलते ही उसकी बिरादरी में बड़ों का रोष भड़का हुआ था। अभी तक में से जो जाति में से बड़े-बड़े 'सेठ' या समाज के अग्रणी प्रगट हुए हों, उसमें से कोई युवक संसार से भाग कर 'भगत' हो जाए, तो उनके मन में नात की इज्जत के लिए कलंक था। इसलिए ही वे अग्रणी और कितने युवक हाथ में लकड़ीयाँ वगैरे लेकर बापा का 'सत्कार करने' जसदण रोड के ऊपर गाँव की सीमा पर इकट्ठे हुए थे।

बापा की गाड़ी गाँव की सीमा पर आई कि 40-50 जनों की टोली ने उनकी गाड़ी को घेर लिया। उन सभी ने उग्रता से बापा के आगे खुद की बात रखी और उस युवक को साधु करने बारे मानो एक चेतावनी ही दी। परंतु बापा ने तो अलग ही लीला करी। खूब ही सहजता से मानो वे तो इस बारे में कुछ भी जानते नहीं ऐसी सहज निर्दोषता से बोले कि–
'मुझे इस बारे की कुछ विशेष जानकारी नहीं। यह सब दादुभाई कर रहे हैं। उनकी बातों से और उनकी प्रेरणा से ही ये सब युवक साधु हो रहे हैं। वो पीछे ही गाड़ी में आ रहे हैं। आप उनसे बात करो।'

यूं कह कर वे वहां से तुरंत आगे जाने निकल गए। थोड़ी ही देर में काकाजी की गाड़ी भी गाँव की सीमा पर पहुँची और जो दृश्य काकाजी ने देखा उससे उन्हें सारी परिस्थिति का ख्याल पड़ गया। बापा आगे निकल गए हैं और उनके लिए रुके भी नहीं हैं, यह भी उनकी पैनी नज़र ने भाँप लिया था। जो दृश्य बापा के आगे बना था, वह अधिक तीव्रता और उग्रता से काकाजी के पास बना। काकाजी गाड़ी में से बाहर आए। सभी को उनकी निजी सूझ से शांत किया और सारी परिस्थिति संभाल ली। वह युवक स्वेच्छा से ही साधु हुआ है और इस सारे प्रकरण में बापा बिलकुल 'निर्दोष' हैं, यूं बातचीत करी। और यदि उनकी इच्छा हो तो उसे वापिस भेज देने की भी तैयारी बता कर सभी को आश्वस्त किया। आधे घंटे पहले जो उद्वेग और अविश्वास का माहौल था उससे अलग ही शांति-समाधान का माहौल सर्जित करके काकाजी ने विदाई ली। **समग्र प्रसंग बेहिचक काकाजी के सिर पर लादने वाले योगीबापा को काकाजी का कैसा भरोसा होगा ?**

इसी तरह एक बार बापा विचरण में जा रहे थे। काकाजी गाड़ी में साथ ही बैठे थे। निश्चित स्थल पर पहुँचने की जल्दबाजी होने के कारण बापा ने काकाजी को कहा – **'हम रास्ते में कहीं पधरामनी करने नहीं जाएंगे। इसलिए रास्ते में जहां भी गाड़ी खड़ी रहेगी वहां मैं बाहर नहीं आऊँगा। तुम हरिभक्तों को समझा देना।'**

बीच के एक गाँव में हरिभक्तों को सूचना मिली थी कि बापा वहां से गुजरने वाले हैं। सो, जैसे ही बापा की गाड़ी वहां पहुँची कि वे सभी गाड़ी के पास इकट्ठे हो गए। पहले हुई बात के मुताबिक तुरंत ही काकाजी गाड़ी में से बाहर आए और सभी को कहा कि– 'हमें जल्दी पहुँचना है, तो आप दूर से ही बापा के दर्शन कर लो और पधरामनी का आग्रह नहीं रखना।' परंतु हरिभक्त तो आग्रहपूर्वक चिपके रहे और कई तो बिलकुल गाड़ी के नज़दीक जाकर बापा को पधरामनी के लिए प्रार्थना करने लगे। बापा ने तुरंत ही उनका प्रस्ताव स्वीकार कर कहा– **'हम कहां मना कर रहे हैं ?'** काकाजी ने तुरंत ही बाजी संभाल ली और शांति से बापा की पधरामनियाँ करवाई। कल्पना करें कि बापा ने ही उन्हें 'ना' करी थी और उन्होंने ही इस प्रकार जाहिर में हरिभक्तों के बीच उन्हें झूठलाने की लीला करी ! बापा के लिए काकाजी को कोई संदेह तो क्या लेकिन कोई गलतफहमी भी नहीं हुई, दुःख तो क्या रंचमात्र क्षोभ भी नहीं हुआ। इतना ही नहीं, सामने से उनकी पधरामनी के संकल्प में जुड़ कर आयोजन करना वह काकाजी की कैसी भीड़ाभक्ति होगी ?

1961में 51 युवकों को दीक्षा देने के बाद उनके लिए मुंबई में एक अच्छे स्थायी निवास स्थान की जरुरत पड़ी। कई स्थान देखने के बाद फिलहाल दादर स्टेशन के सामने जो मंदिर है वह जगह पसंद आई। उस समय उसमें मिस्टर सोल्डर नाम के एक अंग्रेज गृहस्थ रहते थे। कोई और जगह दिलवा कर उसे खाली करवाने की जिम्मेदारी बापा ने काकाजी को सौंपी थी। काकाजी उनसे मिले और सारी बात करी व उसकी पसंद की दूसरी जगह देने की इच्छा बताई। उसे लगभग 60 जगहें बताई। परंतु किसी न किसी कारण से वे हर एक जगह में दिक्कत बता देते और जगह खाली नहीं कर रहे थे। दूसरी ओर योगीबापा जल्दबाजी करते कि– 'क्या हुआ ?' आखिर खूब मत्थापच्ची करने के बाद मिस्टर सोल्डर को एक जगह पसंद आई और काकाजी के कहने पर कांतिकाका ने

उनकी अपनी ट्रान्सपोर्ट कंपनी द्वारा उसका सारा सामान नई जगह में भिजवा कर उसे खाली करवाया। यह सारी दौड़ाभागी में काकाजी के समय, शक्ति और धन का भी खूब ही व्यय हुआ था। बापा भी उतावलापन दिखाते, सो दूसरे बड़े भी काकाजी पर दबाव डालते। लेकिन यह सब न गिन कर केवल बापा की प्रसन्नता के लिए काकाजी ने भीड़ा भक्ति की यह सेवा अदा करी।

इस प्रसंग के थोड़े समय के बाद भारत सरकार के तत्कालीन माननीय रेलवे प्रधान और ब्रह्मस्वरूप शास्त्रीजी महाराज के परम कृपापात्र प.भ. गुलजारीलाल नंदाजी दादर मंदिर में योगीबापा के दर्शन करने पधारे। काकाजी भी हाजिर थे। नंदाजी पधारे सो बापा ने एक सभा का आयोजन किया। संतों का नया मकान देख कर नंदाजी खूब प्रसन्न हुए। उसके बाद नंदाजी का हारमाला से स्वागत किया गया। स्वागतविधि पूरी होने के बाद बापा ने तुरंत ही एक अग्रणी गृहस्थ को बुलाया और नंदाजी को कहा कि– 'इन्हें हार पहनाओ। नीचे का फ्लैट खाली कराने के लिए इन्होंने खूब परिश्रम किया है।' वहां हाजिर रहे सभी जानते थे कि फ्लैट के लिए परिश्रम करने की बात तो दूर रही, लेकिन फ्लैट का कब्जा मिलने में जो विलंब हुआ उसके लिए बिना बात के काकाजी को आए दिन टोकने वाले वे थे। वे तो हार पहनने खड़े भी हो गए... काकाजी कोई अलग ही मस्ती से बापा की लीला को निहारते रहते थे कि– कैसे अप्रतिम अधिकार से बापा उनकी देखी उपेक्षा करके उन अग्रणी को नंदाजी द्वारा हार पहनवाने का आदेश देकर संभाल लेने की लीला कर रहे हैं ! अपने इस प्राण प्यारे शिष्य की ऐसी टेढ़ी कसौटी में भी एक टक रही उसकी निष्ठा और दिव्यभाव निहार कर बापा मानो हार गए और काकाजी को आगे बुला कर नंदाजी को कहा– 'ये दादुभाई को हार पहनाओ। फ्लैट के लिए दरअसल सारी मेहनत इन्होंने करी है।' नंदाजी ने सहज ही पूछा कि– 'अभी तो उस भाई को हार पहनाने कहा था !' बापा बोले– 'वे तो बड़े हैं इसलिए उनका नाम लेना पड़े, लेकिन सारी मेहनत दादुभाई की है।' नंदाजी तो काकाजी और बापा का यह संबंध निहार कर ताजुब हो गए और हाजिर रहने वाले सभी यह दिव्य लीला को प्रत्यक्ष निहारने सद्भागी बने और धन्यता अनुभव करने लगे। **इसी समझ को ही तो कहा जाए न–'महेबूब की हर चीज़ महेबूब लगती है !'**

सत्संग में काकाजी की बढ़ती प्रतिष्ठा और योगीबापा की उनके प्रति की अंतर की प्रसन्नता की अमृतवर्षा से कई तेजोद्वेषी किसी ना किसी मुद्दे पर काकाजी को शिकस्त में लेने लगे रहते। उसी समय में ही बहनों के भगवान भजने की स्वतंत्ररुप से व्यवस्था करने के लिए बापा की ही मर्जी और अनुमति से काकाजी और पप्पाजी कार्यरत हुए थे। बस, इन्हें बहाना मिल गया और काकाजी व पप्पाजी के लिए उन्होंने सत्संग समाज में बिलकुल बेतूकी और क्षुल्लक बातें शुरु करी। अरे, काकाजी के चरित्र पर भी कीचड़ उछाली, झूठे आक्षेपों की झड़ी बरसाई। काकाजी ने एक-दो बार सही ढंग से ही सत्य हकीकत की स्पष्टता करी, तो उसे अपना बचाव गिना कर विरोध में उन्हें डॉटने के लिए बापा को आग्रहपूर्वक अर्ज करी। पर, काकाजी का कोई विरल दर्शन करवाने बापा ने सोचा हो या फिर उन बड़ों को संभाल कर सत्संग समाज में ईर्ष्या और द्वेष की अग्नि को फैलने से रोकना चाहते हों, कुछ भी कारण हो- लेकिन उन्होंने उनकी मांग के मुताबिक काकाजी को बुला कर उनसे माफी मांगने और दंडवत् करने कहा। काकाजी के लिए तो बापा की इच्छा वही जीवन था। इसलिए किसी भी प्रकार के क्षोभ के बिना केवल बापा के ही भाव से उन्होंने बड़ों से माफी माँगी और उन्हें दंडवत् भी किया ! अटलादरा मंदिर में यह विरल दृश्य निहार रहे निजी सेवकों की आँख में जो आसूँ थे, उससे अधिक हर्ष के आसूँ योगीबापा की आँखों में थे। अपने प्राणप्यारे शिष्य के लौकिक न्याय का बलिदान देकर उन्होंने उनकी आध्यात्मिक गरिमा को एक ज्यादा ऊँचाई के शिखर पर स्थापित किया !

सच में तो जब उनका सन्मान होना चाहिए था, जाहिर में उनकी प्रशंसा करनी चाहिए थी, तब बापा ने दूसरों को निभाने के लिए काकाजी के स्वमान का, उनकी प्रतिष्ठा का बलिदान दिया और काकाजी ने भी रंचमात्र भी हिचकिचाहट के बिना तन से, समय से या धन से ही नहीं बल्कि मन से पूरा सहकार देकर 'स्व' की आहुति दी। शिष्य के ऐसे अजोड़-टोटल समर्पण, ऐसी अनुपम पात्रता को देख कर भला कौन गुरु अपनी अन्तर की प्रसन्नता लुटाए बिना या फिदा हुए बिना रह सकता है ?

3 फरवरी 1952 की मंगल क्षण से प.पू. काकाजी स्वयं तो पल-पल ज्ञानसमाधि में वर्ते ही, इससे भी अधिक उन्होंने उस सुख को स्वयं तक ही सीमित नहीं रख कर पात्रता या अपेक्षा - कुछ भी देखे बिना केवल एकमात्र 'योगी का अल्प संबंध' देख कर जीवन की आखिरी क्षण तक सभी को निरंतर बांटते ही रहे, बांटते ही रहे... इसमें सभी को हिस्सेदार बनाने की अदम्य इच्छा रखी। अक्सर तो यूं होता है कि जिस किसी को कुछ मिलता है, तो उसे वह झेल नहीं पाता और शायद यदि झेल भी पाए तो अपनी गरिमा कहीं गौण ना हो जाए इस डर से उसे विशाल हृदय से बांटने की इच्छा नहीं रख पाता। यह प्रसाद जिस-जिस ने लिया, वे सभी गुणातीत समाज के सभ्य बन गए !

ऐसी विरल विभूति प.पू. काकाजी के अमृत सकंल्प की परिधि में हम सभी आ गए... आज भी स्थूल रुप से उपस्थित

ना होने के बावजूद हमारे चैतन्य के विकास के लिए वे वैसी की वैसी परवरिश कर रहे हैं। सच, मौज में बख़्शिश मिल गई- जन्मोंजनम के लिए निहाल हो गए, उसका ही आनंद है। ऐसे अमृतस्वरुप प.पू. काकाजी के साक्षात्कार की स्वर्णजयंती पर उन्हें अन्तर के धन्यवाद सह कोटि-कोटि चरणवंदना...

स्थूल रुप से प.पू. काकाजी भले हमारे बीच नहीं हैं, तब भी उनके अभय वचन गूँजते ही रहेंगे–क्योंकि वे यदि अभी भी इस उत्सव में स्थूलरुप से हाजिर होते तो हमेशा की तरह कहते– **'अभी तक का सब माफ... लेकिन अब नया प्रारब्ध खड़ा नहीं करना... भूतकाल भूल जाना...'।**

यह केवल शाब्दिक आश्वासन नहीं था। इन शब्दों के पीछे प्रचंड शक्ति थी, अकल्पनीय परिश्रम था और हम तो खूब ही सहज भाव से यह सुन कर उसी प्रमाद में रम जाते थे और फिर भी काकाजी उससे निर्लेप होकर उसी रीत से दोबारा माफी दोहराते थे। क्योंकि वे जानते थे कि हमारे मलिन प्रारब्ध हमें कहां से कहां घसीट कर ले जाएंगे। इसलिए उनकी उस क्षमा की ढाल से हमारे प्रारब्धों के उस तूफान को दूर से दूर धकेल देते। हमें मानो दोबारा नवजीवन देते और ऐसा तो उन्होंने अनेक बार किया। 'बापा ने सभी को निभाया, निभाया, निभाया ही'– यूं उन्होंने बात बापा की करी, लेकिन गुरुभक्ति अदा करने वही करुणा खुद अस्खलित बहाते ही रहे और तब भी हमारी जीवदशा-जड़ता में रचे रह कर हम उन्हें नापते ही रहे... कितना प्रचंड विरोधाभास ! फिर भी आज अपरोक्ष रुप से वही करुणा लगातार बह रही है... और 'जब से जगे तब से सवेरा...' इस कहावत से तो हम सभी परिचित हैं; तो अब तो प.पू. काकाजी को अपनी ओर से ठंडक पहुँचाने उस राह पर अग्रसर होने कृतनिश्चयी बनें... वही हमने प.पू. काकाजी के साक्षात्कार दिन की सही अर्थ में स्वर्णजयंती मनाई कही जाए ना !

और... यह भी खूब हर्ष की बात है कि **प.पू. काकाजी महाराज के साक्षात्कार का स्वर्णजयंती महोत्सव प.पू. हरिप्रसादस्वामिजी ने** 31 दिसंबर को सभी प्रगट स्वरुपों की निश्रा में **हरिधाम-सोखड़ा में बड़ी धूमधाम से मनाया**... हम सभी भलीभांति जानते हैं कि उत्तरभारत के मुक्तों के लिए प.पू. काकाजी महाराज ने हर प्रकार से अत्यधिक परिश्रम किया है। सो, उत्तर के मुक्त भी प.पू. काकाजी महाराज के प्रति अपनी भक्ति अदा कर सकें, इसलिए मार्च के महीने में प.पू. काकाजी महाराज के साक्षात्कार का स्वर्णजयंती महोत्सव दिल्ली में स्थानीय रुप से मनाया जाएगा... इसकी विशेष जानकारी **'भगवत् कृपा'** के अगले अंक में प्रस्तुत करेंगे।

('अक्षरधाम' और 'गुणातीत ज्योत' पत्रिकाओं से संकलित)

✡ ✡ ✡ ✡ ✡

ब्रह्मप्रवाह...

✹ अति उत्तम मुक्त, विदेही मुक्त या धाम के अनादि मुक्त या निर्विकल्प स्थिति को पाए हुओं को केवल महाराज का या प्रगट साक्षात् संत का ही आधार - अनुसंधान होता है।
उसके अलावा कोई भी आधार ना रहे, वह सर्वोपरि स्थिति का लक्षण है
और
उसे वच. लोया-17 तथा म.30 सिद्ध हुआ कहा जाए।

✹ इतना ठीक नहीं हुआ और ऐसा किया होता तो अच्छा रहता,
(यूं सोचना स्वरुप को) सर्वज्ञ माना ना कहा जाए।
वे जो कुछ भी करते होंगे, सभी के हित के लिए - भले के लिए ही होता है
यूं देखने की दृष्टि रखनी। वही निर्गुण दृष्टि है।
यह ख्याल रहता तो है, पर अखंड नहीं रहता। वह आदत डालनी।

✹ धाम, धामी और मुक्तों के बिना अन्य किसी भी व्यक्ति या पदार्थ का
प्रभाव या सत्यता हृदय में रहनी ही नहीं चाहिए।
जब तक रहती है तब तक... !
प्रसंगों द्वारा वह निकल देने के बाद ही छुटकारा है।
और ना निकले तो... !
गुरु बल देकर, समझदारी देकर जगत निकाल देता है, वही बड़ी कृपा है। यह तो प्रसन्नता है।
हेतरुपी माया – **सगे रिश्तेदारों** की या **वे सत्संगी भी चाहे क्यों ना हो** तब भी
वह आखिरकार तो साधना में ज्ञान से छोड़ ही देनी पड़ती है।
वहां फिर कोई सिफारिश नहीं चलती।

✹ ब्रह्म को कालभेद, स्थानभेद, जातिभेद होता ही नहीं।
सो, दूर होते हुए पू. बापा की अखंड हाजिरी का हमें अनुभव करना है।
इसीलिए ही कृपा करके पू. बापा ने ऐसा प्रसंग खड़ा किया है।
ब्रह्म का मनन द्वारा संग करने की सहज आदत पड़ने पर बाह्यवृत्ति बिलकुल ही बंद हो जाएगी।
गुणातीतज्ञान में कोई भूल करता ही नहीं... किसी का भी कसूर नहीं है।
तो मन, बुद्धि के आवेगों को छोड़ कर भजन में लगे ही रहना,
जिससे कि नया ही अनुभव–उनकी अखंड हाजिरी की प्रतीति पू. बापा करा ही देंगे।

✹ मुक्तों को (प्रभु का) संबंध तो है, पर उन्हें अधिकार नहीं ही होता,
वे साधक जरुर हैं, लेकिन स्वरुप के सिद्ध नहीं हैं।
तब तक प्रकृति बाधारुप बनती है, डाँवाडोल कर देती है। लय भी कर दे !
सो, 'महाराज और पू. बापा सर्वोपरि व प्रत्यक्ष हैं' और उनका ही जँचता करना है, ऐसा मन दृढ़ करते जाना
और
ऐसों की संगत पक्की रखनी।
दूसरे महामुक्त खूब समर्थ और सिद्ध हों– गोपाळानंदस्वामी, स्वरुपानंदस्वामी जैसे,
परंतु यह गुणातीत ज्ञान सीखना ही पड़े, अभ्यास रखना पड़े, उसके लिए साधना करनी ही पड़े !
ऐसा तुम्हें बनाना ही है। सो, खुल्ले दिल से, किसी का भी (दोष-स्वभाव) देखे बिना लग पड़ना।
तुम अपनी मंजिल पर जरुर पहुँच जाओगे, ऐसे शुभाशीष हैं। ***– प.पू. काकाजी महाराज***

व्रतोत्सवसूची

(1)	दि. 23.1.2002, बुधवार	–	गुरुहरि प.पू. योगीजी महाराज का स्वधामगमन दिन
(2)	दि. 25.1.2002, शुक्रवार	–	एकादशी, व्रत
(3)	दि. 28.1.2002, सोमवार	–	मू.अ.मू. गुणातीतानंदस्वामी की दीक्षा तिथि
(4)	दि. 3.2.2002, रविवार	–	ब्रह्मस्वरुप प.पू. काकाजी महाराज का साक्षात्कार स्वर्णजयंती दिन
(5)	दि. 8.2.2002, शुक्रवार	–	एकादशी, व्रत – गुरुहरि प.पू. योगीजी महाराज की स्वधामगमन तिथि
(6)	दि. 17.2.2002, रविवार	–	वसंतपंचमी, शिक्षापत्री जयंती, ब्रह्मस्वरुप स्वामिश्री प.पू. शास्त्रीजी महाराज की जयंती
(7)	दि. 23.2.2002, शनिवार	–	एकादशी, व्रत
(8)	दि. 7.3.2002, गुरुवार	–	ब्रह्मस्वरुप प.पू. काकाजी महाराज का स्वधामगमन दिन
(9)	दि. 9.3.2002, शनिवार	–	एकादशी, व्रत
(10)	दि. 12.3.2002, मंगलवार	–	महाशिवरात्रि
(11)	दि. 13.3.2002, बुधवार	–	प.पू. गुरुजी का प्रागट्य दिन (31 मार्च, रविवार को दिल्ली में मनाया जाएगा।)

TO,

Air Mail
'**Bhagwatkripa**' Bimonthly Magazine
Despatched on 15th of alternate months from January
If undelivered please return to :—
Printer, Publisher, Editor :—
SHRI PRABHAKAR RAO *FOR* YOGI DIVINE SOCIETY- DELHI
'Taddev', Kakaji Lane, Swaminarayan Marg,
Ashok Vihar-III, Delhi-110 052 (India) Tel.: 7229327, 7249327
Type Setting : **SHAYOKA Type Setting**
Rama Vihar, Delhi-110081 Phone: 5483035
Printed at : **Delux Offset Printers**
308/4, Shahzadabad, Opp. Rohtak Road, Daya Basti, Delhi